January 2014
TODAY
(Newsletter of Eurasia Reiyukai)
संख्या १, अंक ७

शुभकामना

यूराशिया रेयूकाई के सम्पूर्ण सदस्य, लीडर्स एवं शुभचिंतकों में नववर्ष सन् २०१४ की हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त करते हैं।

यूराशिया रेयूकाई २५वीं शाखा के मिहाता जिम्मेवार शिबुचो श्री चुड़ामणी तण्डुकार जी की अपील

यूराशिया रेयूकाई २५वीं शाखा का जन्म १० मार्च २००७ को काठमांडू में हुआ। काठमांडू की धोबीधारा में मुख्य भवन अवस्थित इस शाखा में नेपाल के मेची से राप्ती अंचल और भारत के बिहार, सिक्किम, महाराष्ट्र प्रांत मिलाकर कुल २,४१,१९६ सदस्य साथ-साथ यूराशिया २५वीं शाखा की छांव में रहकर अभ्यास करने का मौका प्राप्त कर रहे हैं। यूराशिया रेयूकाई समाज में योगदान देने वाली संस्था है। पूर्वज स्मरण, कर्म के सम्बन्ध का शुद्धिकरण और प्रायश्चित अभ्यास के माध्यम से अपने में रहने वाले बुरे कर्म के सम्बन्धों को अच्छाई में परिवर्तन कर, अंतरात्मा का विकास कर, विश्वशांति के लिए अपने जैसे ज्यादा से ज्यादा लोगों को योगदान कर सकने योग्य बनाते जाना ही रेयूकाई का उद्देश्य है। इसके लिए मिचिबिको करना आवश्यक है। मिचिबिकी के माध्यम से इस शिक्षा से परिचित होकर अपने जन्म देने वाले अभिभावक के प्रति सेवा और आदरभाव रखने तथा अपने गुजरे हुए पूर्वजों को स्मरण करने का मौका पाकर आध्यात्मिक संसार में रहने वाले अपने पूर्वजों में सम्बोधि ज्ञान जागृत कराने का महान् मौका प्राप्त किए हैं। इसके लिए सोकाइम्यो के माध्यम से पूर्वजों का स्वागत कर अभ्यास करने का मौका प्राप्त करना जरूरी है।

आज २१वीं शताब्दी के लोगों का पैसे के पीछे लगकर मन गरीब होता जा रहा है। अपने जन्म देने वाले माता-पिता को वृद्धाश्राम में ले जाकर छोड़ने का प्रचलन बढ़ रहा है। लेकिन रेयूकाई शिक्षा में अपने अभिभावकों के गुण को इस तरह भूलने से नहीं होगा, बड़ों को आदर और छोटों को स्नेह कर, परस्पर एक दूसरे की खुशी की कामना कर दया बांटते हुए मुस्कानयुक्त बन समाज में समुन्नति, समृद्धि के लिए कार्य करने की महान् जिम्मेवारी और कर्तव्य पूरा करना आवश्यक है, ऐसा महसूस करने का मौका प्राप्त कर रहे हैं। अपना घर शांत होने पर भी पड़ोसी के घर का विवाद अवश्य अशांति का कारण बनता है। इसलिए केवल अपने घर की सुखी और शांति के लिए न सोचकर अन्य लोगों और घरों के बारे में भी सोचें, उनकी खुशी के लिए कार्य करें। ऐसा नहीं करेंगे तो विश्वशांति के लिए योगदान कर नहीं सकेंगे। हमेशा सीखने की भावना, कृतज्ञता की भावना और क्षमा की भावना का क्रियान्वयन कर, चलें मिलियन- तुरंत कार्यान्वयन अभियान में स्वयं को परिचालित कर, अन्य लोगों को भी परिचालित कराकर मिचिबिकी के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा सदस्यों को इस शिक्षा से अवगत करा कर ज्ञान, कला और क्षमता को इस समाज में लगाने का कार्य करें। जीवित लोगों के कारण ही यह संसार बुरी स्थिति की ओर जा रहा है। हम जीवित लोग ही इन समस्याओं का समाधान कर इसे समुन्नत समाज बनाकर आगामी पीढ़ी को उज्ज्वल भविष्य हस्तांतरित कर सकते हैं। कृपया आगे आएं, एकजुट होकर, दत्तचित्र होकर रेयूकाई शिक्षा का स्वयं कार्यान्वयन कर कार्यान्वयन कराते हुए ठोस परिणाम दिखाएं!

यूराशिया रेयूकाई २५वीं शाखा का भवन

सानेपा, नेपाल — मुमाजी की प्रेरणा से हस्तकला प्रशिक्षण संपन्न — सिलीगुड़ी, भारत

मुमा हिरोको मासुनागा जी की प्रेरणा में विगत ६ दिसम्बर २०१३ को यूराशिया रेयूकाई समाज विकास केन्द्र के सानेपा भवन में नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों काठमांडू, ललितपुर, भक्तपुर एवं कीर्तिपुर की ७५ महिलाओं की सहभागिता में एक-दिवसीय हस्तकला प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। उक्त कार्यक्रम में यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी एवं मुमा जी द्वारा मार्गनिर्देशन प्रदान किए गए!

मुमा हिरोको मासुनागा जी की सक्रियता में २४ दिसम्बर २०१३ को यूराशिया रेयूकाई समाज विकास केन्द्र सिलीगुड़ी भवन में भारत के विभिन्न क्षेत्रों की ७८ महिलाओं की सहभागिता में एक-दिवसीय हस्तकला प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उक्त अवसर पर यूराशिया रेयूकाई के संस्थापक अध्यक्ष एवं मुमा जी द्वारा मार्गनिर्देशन प्रदान किए गए!

व्यक्तिगत अनुभव

नाम : श्री प्रशांत भुजेल
क्षेत्र : गरगंडा, लंकापाड़ा
ओया : होजाशु श्री प्रवीण भुजेल
उपाधि : होजाशु
शिबुचो : श्री जीवन राई
मिहाता शाखा : यूराशिया रेयूकाई २१वीं शाखा

सभी को नमस्कार!

मुझे इस रेयूकाई शिक्षा से स्कूल जीवन में ही मुलाकात हुई थी। जब मैं पहली बार रेयूकाई का नाम सुनने का मौका पाया, उस दिन मेरे शिबु और उनके सहयोगी मित्र ने मेरे घर में आकर मेरे पिता श्री मणिकुमार खवास जी को रेयूकाई के लक्ष्य-उद्देश्य की जानकारी करायी और उन्हें सदस्य बनाया। मेरा और मेरे बड़े भाई का सदस्यता - फार्म भी भरकर ले गए। उसके बाद मेरे क्षेत्र में भी मिलन आयोजित करने का मौका उन्हें मिला, लेकिन मुझे सदस्य बनने की इच्छा नहीं थी। मिलनों में जाने और सूत्रपाठ करने में एकदम मन नहीं लगता था। मेरे पिता द्वारा घर में ओदाइमुको एवं सूत्रपाठ करते समय मैं गलत तरीके से हंसता और उनका मजाक उड़ाया करता था। गांव में जहां-जहां रेयूकाई का मिलन आयोजित होता था, वहां-वहां पहुंचकर विभिन्न प्रकार के उटपटांग सवाल किया करता था। मेरे अपने घर में मिलन का आयोजन होते समय अपने कमरे में जाकर गाना-बजाना कर उन्हें बाधा पहुँचाया करता था। एक दिन मेरे पिता जी मुझे लंकापाड़ा के एक मिलन में लेकर गए। वहां पहुंचकर देखा कि वहां के सभी लोगों ने हाथ जोड़कर मुझे नमस्कार करते हुए अभिवादन किया, यह देखकर मैं काफी अचंभित हुआ। वहां मैं भी भवन में प्रवेश किया, वहां सभी लोग मिलकर कतार में बैठे हुए थे। कुछ समय बाद कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। सूत्रपाठ में बार-बार 'बुद्ध को नमो' वाक्य लिखे हुए हैं। हम हिन्दू धर्म मानने वाले हैं। वैसा सुनने पर मुझे लगा कि हमें जीवन राई जी ने बौद्ध धर्म में प्रवेश करा दिया है। मेरे पिता को यह लोग बौद्ध बनाना चाह रहे हैं, ऐसी बातें मेरे मन में उठने लगीं। मुझे वहां मिहाता जिम्मेवार शिबुचो श्रीमती देवकी राई जी का मार्गनिर्देशन सुनने का मौका मिला। उनके मन्तव्य से मैं काफी प्रभावित हुआ और रेयूकाई शिक्षा कोई धर्म नहीं है, यह स्पष्ट रूप से जानने का मौका पाया। आज से मैं भी रेयूकाई शिक्षा को गहराई से महसूस कर अपने समाज, देश व राष्ट्र के प्रति योगदान पहुंचाने वाला व्यक्ति बनूंगा, ऐसी प्रतिज्ञा करने का मौका पाया। अपने क्षेत्र में लौटकर महान् रेयूकाई शिक्षा को घर-घर में जाकर प्रचार-प्रसार कर मिलन आयोजित करने का मौका पाकर मिचिबिकी करने लग गया। इसी क्रम में सिलीगुड़ी के पायल सिनेमा हॉल में पहली बार यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी का दर्शन करने का मौका पाकर पूर्वज स्मरण के सम्बन्ध में दिए मार्गनिर्देशन से प्रभावित होकर दैनिक रूप में सूत्रपाठ चढ़ाने का मौका प्राप्त करता आ रहा हूँ। इस प्रकार रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास करते हुए हंसी-खुशी जीवन यापन करते जाने के क्रम में एक दिन ऐसा दुःख का वक्त आया कि १९ जून २००८ को एक क्षण की बीमारी में मेरे पिता जी की मृत्यु हो गयी। उस समय पूरा घर-परिवार, पड़ोस और रेयूकाई सदस्य दुःख के सागर में डूब गए। उस समय वर्षा का मौसम रहने के कारण लगातार तीन दिनों से वर्षा हो रही थी और सामान्य जीवन भी अस्त-व्यस्त था। २० तारीख को हमलोग पिता जी के शव को जंगल ले गए। मूसलाधार वर्षा हो रही थी, लेकिन हिन्दू परंपरा के अनुसार शव का दाह-संस्कार करना था, जो काफी मुश्किल था। शवयात्रियों व हमारे परिवार के बीच विचार-विमर्श हुआ। सभी कह रहे थे कि ऐसी स्थिति में आग देना तो संभव नहीं है, मिट्टी में दफनाना होगा। वहां मेरे शिबुचो श्री जीवन राई और अंकल मदन घिसिंग भी उपस्थित थे। उनलोगों ने सभी शवयात्रियों और पंडित से अनुरोध किया और हम सभी ने पिता का होम्यो पाठ कर ओदाइमोकु किया। ऐसा करने से आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। मूसलाधार बारिश धीरे-धीरे कम होने लगी और ऐसी स्थिति बनी कि पिता जी का दाह-संस्कार सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। यह पूर्वज स्मरण एवं होम्यो की शक्ति के कारण हुआ, ऐसा मैंने महसूस किया। आज तक इस महान् रेयूकाई शिक्षा का उत्साह के साथ अभ्यास करने का महान् मौका प्राप्त करता आ रहा हूँ। इस प्रकार अभ्यास करते जाने के क्रम में मिचिबिकी के पुण्यफल का संचय करने का मौका पाकर १४ अक्टूबर २०१२ को गोहोम्यो आत्माग्रहण समारोह में भाग लेने का मौका प्राप्त किया और सौ दिनों के अभ्यास को सौ दिनों में ही पूरा कर अपने विभिन्न क्षेत्रों में जाकर सदस्यों के सोकाइम्यो विराजमान कराकर पूर्वज स्मरण कराने का महान् मौका प्राप्त कर रहा हूँ। अपने अंतर्गत के दो लीडर्स भी गोहोम्यो आत्माग्रहण समारोह में भाग लेने का मौका प्राप्त कर चुके हैं। मैं अपना जीवन रहने तक रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास कर 'चलें मिलियन, तुरंत कार्यान्वयन' कर परिणाम निकालकर जल्द से जल्द जुन-शिबुचो बनने की प्रतिज्ञा करता हूँ। धन्यवाद।

समाज विकास केन्द्र, सिलीगुड़ी के गोहोजा भवन का उद्घाटन

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष के कर-कमलों द्वारा यूराशिया रेयूकाई समाज विकास केन्द्र, सिलीगुड़ी के गोहोजा भवन का १८ दिसम्बर २०१३ को एक समारोह के बीच विधिवत् उद्घाटन संपन्न हुआ।

उक्त समारोह में यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी द्वारा मार्गनिर्देशन भी प्रदान किया गया कि यूराशिया रेयूकाई समाज और देश के विकास में योगदान देने वाले व्यक्ति एक जन भी हो सके, ज्यादा निर्माण करते जाने वाली संस्था है। यूराशिया रेयूकाई समाज विकास केन्द्र कहने पर रथ के दो पहियों की तरह शिक्षा और सामाजिक कार्यों को साथ लेकर कार्य करते जाने का मौका पाकर समाज में योगदान करने वाले असंख्य व्यक्तियों का निर्माण करते जाने का मौका प्राप्त करने वाली संस्था है, ऐसा मार्गनिर्देशन प्रदान किया। उक्त कार्यक्रम २३९ सदस्यों की सहभागिता में संपन्न हुआ।

नेपाल के पश्चिमी क्षेत्र के धनगढ़ी और दैजी क्षेत्र में मिलन समारोह

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी की उपस्थिति में नेपाल के धनगढ़ी में ११ दिसम्बर को होजाशु से ऊपर के लीडर्स को मार्गनिर्देशन प्रदान किया गया। उक्त कार्यक्रम धनगढ़ी स्थित होटल डिभोटी के हॉल में ८४ जन लीडर्स की सहभागिता में संपन्न हुआ। इसी प्रकार १२ दिसम्बर २०१३ को दैजी क्षेत्र

में सदस्यों को संस्थापक अध्यक्ष जी द्वारा मार्गनिर्देशन प्रदान किया गया। उक्त कार्यक्रम दैजी क्षेत्र के १०५ सदस्यों की सहभागिता में संपन्न हुआ।

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के गुवाहाटी एवं इम्फाल का भ्रमण

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी की उपस्थिति में २१ दिसम्बर २०१३ को यूराशिया रेयूकाई समाज विकास केन्द्र गुवाहाटी में सदस्यों को मार्गनिर्देशन प्रदान करने का कार्यक्रम संपन्न हुआ। उक्त कार्यक्रम ८१ सदस्यों की सहभागिता में संपन्न हुआ। संस्थापक अध्यक्ष जी के कर-कमलों द्वारा एक समारोह के

बीच यूराशिया रेयूकाई समाज विकास केन्द्र के इम्फाल कार्यालय एवं गोहोजा का उद्घाटन समारोह कार्यक्रम २२ दिसम्बर २०१३ को संपन्न हुआ। उक्त कार्यक्रम में ७१ लोगों की सहभागिता थी।